Analysis: A Peer Review Research Journal of Language and Human Development (JLHD)

https://www.talentpublication.info/ Issue:3/Volume: 1/2025 ISSN:2583-9985

Spider's Thread

कुमो नो इतो (Kumo no Ito)

Translator: Kumar Surya Prakash
Department of Foreign Languages (Old CHC Building)
Faculty of Arts, Banaras Hindu University
Varanasi, Uttar Pradesh, 221005
Email: ksprakash.fl@bhu.ac.in

The following is a Hindi translation of a story titled कुमो नो इतो (Kumo no Ito) [English Translation: Spider's Thread], written by the famous Japanese author Akutagawa Ryūnosuke.

A brief introduction of the Author

Akutagawa Ryūnosuke (1892-1927), a renowned Japanese author, is associated with the literature of the Showa period and is also considered by many to be the father of Japanese short story writing. Born in a business family, his mother died while he was still very young because of mental illness. He was raised by his maternal uncle. He joined the Tokyo Imperial University (presently known as Tokyo University) and studied English Literature. This is where he began writing as well. He and a few other friends were active in the journal Shinshicho and published creative works and translations. He also did reportage work for a brief period of time. His famous works include Rashōmon, Hana, Kubi ga ochita hanashi, Kumo no Ito, Jigokuhen, Majutsu, Aguni no Kami, Yabu no Naka, etc. He is known for his refinement of style and the psychological depths of his work. He was also inspired by classical literature and folklore. He maintained modern sensibilities while preserving the cultural identity. He struggled with mental health in his later years and finally died by suicide at the age of 35.

The work translated here, i.e. Kumo no Ito is also inspired by Buddhism and Japanese folklore.

मकड़ी का रेशम

प्रथम सोपान

एक दिन की बात है। 'शाक्यमुनि' गौतम बुद्ध अपने लोक में कमल के सरोवर के पास भ्रमण कर रहे थे। सरोवर में खिले हुए कमल के सभी पुष्प रत्न की भाँति श्वेत थे, और पुष्पों के मध्य भाग में व्याप्त स्वर्ण वर्ण के चक्र भागों से आ रही अलौकिक सुगंध, आस-पास के वातावरण को सुगंध से भर रही थी। नया दिन प्रारम्भ हो चुका था। कुछ समय पश्चात 'शाक्यमुनि' बुद्ध सरोवर के किनारे पर कुछ समय के लिए ठहरे, और सरोवर के जल की सतह को ढँक रहे कमल के पत्तों के मध्य से नीचे स्थित लोकों की स्थिति का अवलोकन किया। कमल के सरोवर के ठीक नीचे देखने पर नर्क लोक था। सरोवर के स्वच्छ जल के मध्य से वैतरणी नदी और कंटक पर्वत के दृश्य चलचित्र की भाँति साफ देखे जा सकते थे।

शाक्यमुनि ने देखा कि नीचे नर्क लोक में कान्दाता नामक व्यक्ति दूसरे पापी नर्कवासियों के साथ रेंग रहा है। वह एक भयंकर डाकू था, जिसने लोगों की हत्याएँ कीं, उनके घर जलाए, और न जाने कितने ही पाप किए। मगर शाक्यमुनि को ज्ञात था कि एक बार उस कान्दाता ने भी एक अच्छा कर्म किया था। एक बार जब वह एक जंगल के मार्ग से जा रहा था, तब उसे दिखा कि एक छोटी-सी मकड़ी भी मार्ग के किनारे से रेंगते हुए जा रही है। उसने अपने पैर उठाए और उस मकड़ी को कुचलने को गया, किन्तु तभी उसके मन में यह विचार आया–"नहीं! नहीं! यह भी एक छोटी-सी ही सही, परन्तु जीव ही तो है। इस तरह अकारण इसके प्राण ले लेना ठीक नहीं है।" ऐसा विचार कर उसने मकड़ी को जीवनदान दिया।

शाक्यमुनि ने नर्क लोक को देखते हुए, कान्दाता की उस मकड़ी को जीवनदान देने के प्रसंग को याद करते हुए विचार किया कि उस एक छोटे से अच्छे कर्म के लिए कान्दाता को नर्क से बचाने का प्रयास किया जाए। सौभाग्यवश, समीप ही कमल के चमकीले हरे रंग के पत्ते के ऊपर, एक स्वर्ग की मकड़ी रजत वर्ण का चमकता हुआ सुन्दर रेशम बना रही थी। शाक्यमुनि ने मकड़ी के रेशम को ध्यानपूर्वक उठाया और रत्न जैसे सुशोभित श्वेत कमलों के मध्य से दूर नीचे नर्क लोक की ओर उसे लटका दिया।

द्वितीय सोपान

नर्क लोक के अंतहीन रक्त तालाब की तली में कान्दाता दूसरे पापियों के साथ था। वे सभी कभी रक्त तालाब में डूब जाते, तो कभी ऊपर उभर आते। सभी दिशाओं में घनघोर अंधेरा था, और यदि कभी आशा की किरण में ऐसा प्रतीत भी होता था कि कुछ हल्का-सा ऊपर की ओर आ रहा है, तो वह कंटक पर्वत के चमकते हुए कंटक ही होते थे। ऐसी बेबसी और हताशा और कहीं नहीं हो सकती थी। इसके अतिरिक्त, वहाँ एक श्मशान जैसी शांति थी, तथा यदि कभी कोई ध्वनि आती भी थी, तो वह उन पापियों के रुदन की हल्की-सी ध्वनि ही होती थी। ऐसा इसीलिए था कि नर्क लोक के इस सबसे निचले तल पर आ चुके ये पापी, अलग-अलग नर्क लोकों की यातनाएँ भोग चुके थे, और अब उनमें रुदन की शक्ति भी नहीं बची थी। इसीलिए कान्दाता जैसा भयंकर डाकू भी अब रक्त तालाब के रक्त में घुट-घुटकर एक अधमरे मेंढक की भाँति छटपटा रहा था।

कान्दाता ने ऊपर की ओर देखा। उस कूप अंधेरे में कहीं बहुत ऊपर बुद्ध लोक से, एक रजत वर्ण का मकड़ी का महीन-सा रेशम, मानो दूसरों की दृष्टि से बचता हुआ, उसकी ओर लटकता हुआ आ रहा था। इसे देखकर कान्दाता प्रसन्नता से भर उठा। उसे विश्वास था कि इस रेशम को पकड़कर अगर वह ऊपर चढ़ता जाए, तो वह इस नर्क लोक से निकल सकता है। और अगर सब अच्छा रहे, तो क्या पता, बुद्ध लोक भी पहुँच सके।

फिर कंटक पर्वत और रक्त तालाब का भी कोई भय नहीं रह जाएगा।

इस प्रकार विचार करके, कान्दाता ने अविलंब दोनों हाथों से मकड़ी के रेशम को पकड़ा और पूरी इच्छाशक्ति से ऊपर की ओर चढ़ने लगा। वह एक पुराना नामी डाकू था, और रस्सी चढ़ने जैसी कलाओं में निपुण भी था।

लेकिन नर्क लोक और बुद्ध लोक के बीच हजारों कोसों की दूरी थी, इसीलिए बहुत परिश्रम करके भी तुरन्त निकल पाना सम्भव न था। कुछ समय बाद, कान्दाता थकने लगा और अब वह एक कड़ी भी ऊपर चढ़ पाने की स्थिति में न रहा। कोई चारा न पाते हुए, उसने थोड़ा विश्राम करने का सोचा और रेशम पर लटकते हुए नीचे की ओर देखा।

इतने परिश्रम के फलस्वरूप, वह रक्त तालाब–जहाँ की वह अभी तक था–दूर अंधकार की तली में विलुप्त हो चुका था। और वह भयावह कंटक पर्वत भी अब नीचे छूट चुका था। इस गति से ऊपर चढ़ने से, नर्क लोक से निकल पाना अवश्य ही सम्भव होगा। कान्दाता ने मकड़ी के रेशम को अपने हाथों में लपेटा और अट्टहास लगाते हुए कहा–"ये हुई न बात!" ऐसा स्वर नर्क लोक में आने के बाद से न जाने कितने वर्षों से उसके कंठ से नहीं निकला था।

लेकिन तभी उसका ध्यान इस बात पर गया कि नीचे की ओर असंख्य पापी, चींटियों की पंक्ति की भाँति क्रम से, उसके पीछे-पीछे मकड़ी के रेशम को पकड़कर ऊपर की ओर पूरे परिश्रम से चढ़ रहे हैं। इसे देखकर कान्दाता चकित भी हुआ और घबराया भी। कुछ देर उसका मुख आश्चर्यवश किसी मूढ़ की भाँति खुला रह गया। वह बस यह सब देखता रहा। उसे लगा कि यह महीन-सा मकड़ी का रेशम, जो किसी प्रकार से उसका बोझ सह रहा है और न जाने इतने से बोझ से ही कब टूट जाए–कैसे इन असंख्य पापियों का बोझ सह पाएगा? अगर रेशम बीच में टूट गया, तो इतना सारा परिश्रम व्यर्थ हो जाएगा और सभी पापियों के साथ उसे स्वयं भी उसी नर्क में वापस जाना पड़ेगा। अगर ऐसा हुआ तो बहुत बुरा होगा।

जब तक कान्दाता यह सब विचार कर रहा था, उतनी ही देर में न जाने कितने सैकड़ों-हजारों की संख्या में और भी पापी उस रक्त तालाब की तली से झुंड में ऊपर की ओर उस मद्धिम-से चमकते हुए मकड़ी के रेशम पर चढ़ने लगे। अगर अभी कुछ न किया गया तो रेशम बीच से टूट जाएगा और मैं वापस नर्क में गिर जाऊँगा।

तब कान्दाता ने चिल्लाकर कहा–"अरे! पापियों! ये मकड़ी का रेशम मेरा है। तुम लोग आखिर किससे पूछकर ऊपर चढ़ आए हो? उतरो! उतरो!"

बस उसी समय, वह रेशम जिसे अब तक कुछ नहीं हुआ था–ठीक वहीं से, जहाँ कान्दाता लटका हुआ था–चट-से टूट गया। देखते ही देखते कान्दाता लट्टू की भाँति

घूमता हुआ फिर उसी कूप अंधेरे नर्क लोक की सबसे निचली तली पर उल्टा जा गिरा।

वह चमत्कारी मकड़ी का रेशम अब भी मद्धिम-सी चमक लिए, चाँद और तारों से विहीन नर्क लोक की शून्यता में लटका हुआ था।

तृतीय सोपान

शाक्यमुनि कमल सरोवर के किनारे खड़े सब कुछ ध्यान से देख रहे थे। जब कान्दाता दोबारा एक पत्थर की भाँति रक्त तालाब की सबसे निचली तली में जा समाया, तब शाक्यमुनि चेहरे पर दुख का भाव लिए आगे की ओर बढ़े। कान्दाता चाहता था कि केवल अकेले वही नर्क लोक से बाहर निकले। उसने अपनी इस दयाहीनता के अनुरूप दण्ड पाया और फिर से उसी नर्क लोक में जा गिरा। इस पूरी घटना से शाक्यमुनि भी द्रवित हुए।

लेकिन बुद्ध लोक के कमल सरोवर के कमल के पुष्पों पर इस घटना का कोई असर नहीं हुआ। वे अब भी वैसे ही सुशोभित थे। वे श्वेत वर्ण के पुष्प शाक्यमुनि के चरणों के आस-पास झूलते-लहराते, अपने स्वर्ण वर्ण के चक्र भाग से आ रही मधुर सुगंध से, आस-पास के वातावरण को सुगंध से भर रहे थे। अब थोड़ी ही देर में दोपहर होने को थी।

***